प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403
Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

स्माधि स्थल से गगन तक पहुंचा स्वर
'पूज्य महाप्रज्ञ भगवान'

सरदारशहर 22 मई।

शांतिदूत आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद प्रथम बार समाधि स्थल पर पधारे आचार्य महाश्रमण के द्वारा रचित गीत ''पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान'' की स्वरलहरियां उस समय गगन को छूने लगी जब वहां उपस्थित हजारों भक्तों ने स्वर में स्वर मिलाया। आचार्य महाश्रमण ने करीब 7.50 पर समाधि परिसर में प्रवेश करते ही अपने गुरु आचार्य महाप्रज्ञ की पुनीत स्मृति करते हुए उनकी भक्ति में लीन हो गए। उन्होंने अपना 49वां जन्म दिवस भी आचार्य महाप्रज्ञ की स्तुति के साथ मनाया। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा, मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुत विभा, वयोवृद्ध मुनि सुमेरमल सुदर्शन सहित सैकड़ों शिष्य–शिष्याओं एवं श्रावक समाज को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण बहुतों के मन को व्यथित करने वाला है। ऐसा होना स्वाभाविक भी है। जिन्होंने मानव मात्र को शांति का संदेश दिया। प्रत्येक व्यक्ति को उनके प्रवचनों में अपनी समस्याओं का समाधान नजर आया। अब ऐसा महापुरुष हमारे बीच बाह्य जगत में नहीं है। अगर आप अपने भीतर देखेंगे तो शायद आचार्यश्री महाप्रज्ञ नजर आयेंगे। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा शुरू किये गये कार्यों पर ध्यान केन्द्रित कर उनको आगे बढ़ाने का संकल्प लें। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ की समाधि स्थल के निर्माण का जिम्मा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का रहने की चर्चा करते हुए कहा कि महासभा इस ओर ध्यान दें कि इस समाधि स्थल पर किसी भी विसर्जन कर्त्ता का नाम अंकित नहीं होना चाहिए। उन्होंने ''ऊँश्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः'' मंत्र का जप भी करवाया।

घमंडीराम, पन्नालाल बच्छावत परिवार के फार्म हाउस में निर्मित होने वाली विशाल समाधि के लिए विसर्जनकर्त्ता श्रद्धालुओं में होड़ सी लग गई। देखते ही देखते करोड़ों रुपयों की घोषणा हो गई। महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया ने सबका आभार जताते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की इस समाधि स्थल से जन–जन को नई ऊर्जा प्राप्त होगी। संपत बच्छावत ने 'महाप्रज्ञ वाणी म्हरे जीवन रो आधार' पंक्तियों की प्रस्तुति दी। शासन गौरव साध्वी राजीमति ने कहा कि आचार्य तुलसी मेरे दीक्षा गुरु थे। आचार्य महाप्रज्ञ योग गुरु थे एवं आचार्य महाप्रज्ञ को समाधि गुरु के रूप में देख रही हूं। आप हमें समाधि दिराते रहेंगे। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के 5 काम अवशेष रहे हैं। पहला सापेक्ष अर्थशास्त्र का, दूसरा अहिंसा प्रशिक्षण, तीसरा विज्डम वर्ल्ड, चौथा आगम सम्पादन, पांचवां जैन धर्म को स्वतंत्र धर्म के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में उन्होंने प्रयास चालु कर दिये थे। इन कार्यों को पूर्ण करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)